International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 8 Issue 06 Ser. I || June 2019 || PP 69-72

रामकुमारः एक वस्तुनिरपेक्ष चित्रकार

डॉ0 हेमन्त कुमार राय अध्यक्ष,
एसोसिएट प्रोफेसर चित्रकला विभाग
एम0 एम0 एच0 – कॉलेज,
गाजियाबाद (उ0प्र0)

गगन कुमार
शोधार्थी – चित्रकला विभाग
एम0 एम0 एच0 – कॉलिज
गाजियाबाद (उ0प्र0)

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य कलाकारों ने आत्माभिव्यक्ति को स्वेच्छानुसार प्रदर्शित करने के लिए विभिन्न प्रकारों के कलात्मक प्रयोग द्वारा कलाकृतियों का निर्माण किया था, जिसके माध्यम से अनेक प्रकार की कला शैलियों का जन्म हुआ, जिस कारण कला का विकास हुआ। समस्त कला शैलियों के विकास का यह काल, कला का आधुनिक काल कहलाया। कला क्षेत्र में कलाकारों द्वारा किए गए विभिन्न प्रयोगों के माध्यम से जिन नवीन कला शैलियों का उदय हुआ था, वस्तुनिरपेक्ष कला भी उन्हीं कला में से एक हैं।

साखलकर के अनुसार – 'वस्तुनिरपेक्ष सौंदर्य, आत्मिक अनुभूति, अतियथार्थ कल्पना आदि कलान्तर्गत सृजनशील तत्वों का स्पष्ट व विशुद्ध रूप आधुनिक काल की जिन कला शैलियों में दृष्टिगोचर हो गया है उन सभी कला – शैलियों को आधुनिक कला में सम्मिलित करते हैं, अर्थात ये सभी तत्व सृजनप्रवृत्ति के अविभाज्य अंग होने के कारण न्यून, अधिक मात्रा में प्राचीन, मध्ययुगीन एवं समकालीन सभी

कला शैलियों में विद्यमान होते हैं"।[1] वस्तुनिरपेक्ष कलाकृति के निर्माण में वस्तु के स्वाभाविक बाहरी रूप को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से महत्व नहीं दिया जाता है। वस्तुनिरपेक्ष कला के पहले वर्ग में कलाकार वस्तु के मूल रूप से प्रेरणा प्राप्त करने के पश्चात् किन्तु वस्तु के बाह्य रूप को हटाकर वस्तुनिरपेक्ष कलाकृतियों को निर्मित करता है तथा दूसरे वर्ग में कलाकार आत्मानुभूति व कल्पना के आधार पर वस्तुनिरपेक्ष कलाकृतियों का निर्माण करता है। वस्तुनिरपेक्ष कला को अंग्रेजी भाषा में

'एब्स्ट्रेक्ट' या 'नॉन फिगरेटिव' कहा जाता है। कुछ विद्वान 'एब्स्ट्रेक्ट' के स्थान पर 'नॉन फिगरेटिव' शब्द को अधिक उचित मानते है। प्रसिद्ध कलाकार कान्डिस्की व मोन्द्रिया को वस्तुनिरपेक्ष कला के प्रणेता माना जाता है। वस्तुनिरपेक्ष कला में कान्डिस्की तथा मोन्द्रिया दोनों कलाकारों को समान महत्व दिया जाता है। जहाँ

एक ओर कान्डिस्की ने 1910 ई. में अपना पहला वस्तुनिरपेक्ष चित्र जल रंगों से बनाया था, वहीं दूसरी ओर मॉन्ड्रियन ने 1912 ई. में 'जिंजर पॉट का वस्तु चित्र' व

1914 ई. में उन्होंने पूर्ण रूप से वस्तुनिरपेक्ष चित्र 'अण्डाकार रचना' का निर्माण किया था। अनेक अवस्थाओं को पार करते हुए वस्तुनिरपेक्ष कला को 1906 ई. से 1914 ई. के मध्य अपनी वास्तविक पहचान मिली थी। अनेक भारतीय कलाकार भी वस्तुनिरपेक्ष कला से प्रभावित हुए थे। कुछ कलाकारों की कला कर्म के मध्य या अन्तिम काल में वस्तुनिरपेक्षता का प्रभाव दिखाई देने लगा था व कुछ कलाकारों ने अपने आरंभिक कलाकर्म काल में ही वस्तु निरपेक्षता को पूर्ण रूप से अपना लिया। अनेक भारतीय कलाकार वस्तुनिरपेक्ष कला की ओर आकर्षित हुए, रामकुमार भी उन्हीं कलाकारों में से एक थे।

रामकुमार का जन्म हिमाचल प्रदेश के शिमला में सन् 1924 को हुआ था।[2] रामकुमार जितना शर्मीले स्वभाव के दिखाई देते थे, उतना ही वह अपने विचारों को बड़ी ही सहजता व शालीनता से व्यक्त करते थे। यद्यपि रामकुमार एक प्रसिद्ध चित्रकार थे, किंतु उनकी पहचान एक अच्छे कहानीकार के रूप में भी है। उन्होंने अपने आरंभिक जीवन में एक कहानीकार के रूप में ख्याति अर्जित की थी, किन्तु बाद में वे एक सफल चित्रकार के रूप में अत्यधिक प्रसिद्ध हुए थे। उनके भाई निर्मल प्रसिद्ध साहित्यकारों में से एक हैं, लेकिन जब निर्मल जी ने अपने विचारों को लिखना प्रारंभ किया था उससे पूर्व ही रामकुमार के द्वारा लिखी गई कई कहानियाँ छप चुकी थी। रामकुमार द्वारा लिखित कहानियाँ हो या उनके द्वारा बनाई गई अनेक कलाकृतियां हो, इन सभी में एक बात तो समान रूप से दिखाई देती है कि वे आत्म – अभिव्यक्ति को बड़ी ही गहराई से व्यक्त करते थे। ऐसा बिल्कुल नहीं है कि उन्होंने अपने भावों को पूर्ण रूप से केवल चित्रकला के माध्यम से ही कैनवस पर उकेरा है बल्कि उन्होंने अपने विचारों को कविताओं तथा कहानियों के माध्यम से भी व्यक्त किया है। रामकुमार ने कहा था कि – "लिखी हुई बात को लोग आसानी से

समझ जाते हैं, पर पेंन्टिग में तो सर खपाना पड़ता है, और तब भी बात समझ में आ ही जाएगी, इसकी कोई गारंटी नहीं होती। इसी कारण कहानी ज्यादा पॉपुलर है जबकि पेंटिंग की भाषा समझने वालों की संख्या गिनती की है।" अपनी बाल्यावस्था में रामकुमार को संगीत में विशेष रुचि थी। हरकोर्ट बटलर से हाईस्कूल करने के पश्चात् रामकुमार ने स्नातक की उपाधि प्राप्त की व अर्थशास्त्र विषय में परास्नातक की उपाधि हेतु सेंट स्टीफन कॉलेज –दिल्ली में दाखिला लिया। यहाँ डॉक्टर वी. के. आर. वी. राव तथा डॉ. जाकिर हुसैन जैसे महान विद्वान शिक्षक थे, उनसे मिलने के बाद रामकुमार का साहित्य की ओर भी
रुझान होने लगा व हिंदी में लिखी गयी इनकी कहानियाँ भी छपने लगी थी। एक दिन अपने मित्र के साथ सेंट स्टीफन कॉलेज से लौटते समय वे एक प्रदर्शनी देखने गए।

रामकुमार के अनुसार – "I saw paintings like that for the first time and it made me so intrigued that I returned severral times."[3] उस प्रदर्शनी को देखने के पश्चात रामकुमार रंगों के प्रति इतने आकर्षित हो गए कि उनके मन में चित्रकार बनने के भाव जागृत होने लगे फिर उन्होंने एक आर्ट –स्कूल में प्रवेश लिया, जहाँ वे संध्याकाल में कला –शिक्षा ग्रहण करते थे। अर्थशास्त्र विषय में परास्नातक की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् रामकुमार एक बैंक में नौकरी करने लगे किन्तु पूर्ण
रूप से कला के प्रति समर्पित रामकुमार ने महसूस किया कि वह कला के माध्यम से आत्माभिव्यक्ति को प्रदर्शित करने के लिए अपनी कलाकृतियों के निर्माण हेतु उचित समय नहीं दे पा रहे हैं तथा उनका अधिकाँश समय नौकरी करने में ही समाप्त हो जाता है। इसीलिए पूर्ण रूप से कलाकर्म हेतु समयाभाव के कारण रामकुमार ने कुछ समय पश्चात् ही बैंक की नौकरी छोड़ दी थी। उन्होंने कला साधक के रूप में रंगो को ही अपना जीवन आधार बना लिया था। रामकुमार की कला पर यूरोपियन कलाकारों की कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है

किन्तु ऐसा बिल्कुल नहीं है कि उनकी कला पर किसी एक ही कलाकार या किसी एक ही कला तकनीक का पूर्ण रूप से प्रभाव पड़ने के कारण उन्होंने अपनी कला को पूर्ण रूप से बदल लिया हो। रामकुमार दिल्ली शिल्पी चक्र के सदस्य भी बन गए थे। अपनी अनेक आलोचनाओं के पश्चात् भी रामकुमार अपने कलाकर्म में निरन्तर आगे बढ़ते रहे।

उन्होंने अपनी पहली प्रदर्शनी के बारे में रामकुमार ने कहा था कि – "पहली प्रदर्शनी सन् 1948 में शिमला में हुई थी, और अनुभव के बारे में क्या कहा कहूँ? तब बिल्कुल नया था मैं; लोगों के लिए अनजान अपरिचित। फिर भी वह अनुभव .... जैसे पहली बार कोई पिता बनता है, पहली बार किसी की रचना छपती है या पहली बार अपनी कमाई अपने हाथों में आती है.... इन सब का सुख अपूर्व होता है। मैं प्रदर्शनी में आने जाने वाले हर आदमी से जानने की कोशिश करता कि चित्र उन्हें कैसे लगे? कुछ लोगों के चेहरों को देखकर ही मैं उनके भावों को समझ जाता था, ऐसी प्रदर्शनियों में आने वालों की संख्या बहुत कम होती है, तब तो और भी कम थी, फिर भी जितने लोग आये, उनकी प्रतिक्रियाओं ने मेरा साहस बढ़ाया और मैं पूरी तरह रंग से जुड़ गया।"

रामकुमार ने अपने कला जीवन के प्रारम्भिक काल में आकृतिपरक चित्रों का निर्माण किया था। इस काल की कला में उन्होंने शहरी समाज के विकृत वातावरण व समाज में फैले हुए अलगाव को अपनी कलाकृतियों के माध्यम से प्रदर्शित किया है। इस काल में उनकी कलाकृतियों में निर्मित आकृतियाँ निराशापूर्ण लगती हैं, इन आकृतियों के चेहरों पर छाई हुई उदासी मानो बहुत कुछ कहना चाहती है। रामकुमार ने अपनी इन कलाकृतियों में आकृतियों की आँखें बड़ी बनायी हैं तथा उनकी इन आँखों से एक चमक दिखाई देती हैं। उनके द्वारा निर्मित इन कलाकृ तियों में आकृतियों की आँखों की चमक को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे इन आकृतियों को अपनी किसी खोई हुई वस्तु के पुनः प्राप्त होने की उम्मीद है। उन्होंने अपनी इन कलाकृतियों में भूरा, मटमैला, कत्थई व काला आदि रंगों का
अधिक प्रयोग किया था व इसके अतिरिक्त उन्होंने लाल, नीला व पीला रंग भी कहीं – कहीं प्रयोग किया है। इसके पश्चात् रामकुमार ने अपनी कलाकृतियों में मानवीय दुःख प्रदर्शित करने लगे। उन्होंने अनेक प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण किया था वे वाराणसी घूमने गए वाराणसी जाने के पश्चात् रामकुमार वहाँ की सड़कों, गलियों व घाटों पर घूमे तथा वहाँ के सामाजिक तथा प्राकृतिक वातावरण से अत्यधिक प्रभावित हुए थे। उन्हें वाराणसी, एक लघु भारत की छवि के रूप में दिखाई दिया था। रामकुमार के मन तथा मस्तिष्क पर वाराणसी का अत्यधिक प्रभाव पड़ा और वाराणसी के घाट, दृश्य आदि से प्रभावित होकर रामकुमार ने अपनी आत्माभिव्यक्ति के आधार पर अनेक वस्तुनिरपेक्ष कलाकृतियों का निर्माण किया था। उनकी कलाकृतियों में वाराणसी सीरीज बहुत प्रसिद्ध है, इन कलाकृतियों में उनके वस्तुनिरपेक्ष चित्रों का निर्माण हुआ है। उन्होंने स्याही तथा मोम के रंगों का प्रयोग करके निर्माण किया था। रामकुमार अपना अधिकाँश समय कलाकृतियों को निर्मित करने में ही व्यतीत करते थे।

परम्परा से सम्बन्धित पूछे गए एक प्रश्न के जवाब में रामकुमार ने कहा था कि –"परम्परागत शैलियों के साथ ही अगर पश्चिमी शैलियों का हम समन्वय कर सकें तो यह ज्यादा अच्छा रहेगा। क्योंकि मैं यह भी नहीं कह सकता कि अपनी

परम्परा के मोह में पश्चिम का जो कुछ अच्छा है उसे भी न अपनाया जाए। बल्कि मैं तो यह कहता हूँ कि आज के समय को देखते हुए अपने जीवन के हर क्षेत्र में पश्चिम से अगर हम कुछ ले सकते हैं तो ले लेना चाहिए। इसमें कोई बुराई नहीं है। मॉडर्न आर्ट के पिता पिकासो से अगर हम बचकर चलना चाहे या वान गॉग, सेज़ान, दानिव, रूसो, आंद्रे मालरो, जॉर्जेस ब्राख आदि की कला की ओर हम ध्यान न देकर अपनी परम्परा से ही जुड़ने का दम भरते रहे तो हम कहाँ जाकर खड़े होंगे? आज संसार इतना छोटा हो गया है कि आप बिना एक दूसरे से कुछ लिए – दिए रहे ही नहीं सकते। फिर हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि पश्चिमी कला की अपेक्षा भारतीय कला की परम्परा भी बहुत सनाढ्य नहीं है। दूसरे देशों में उसकी कोई खास पहचान नहीं है। फिर भी जो कुछ है उसे हम संचित न करें यह मैं नहीं कहता पर दूसरी तरफ से आज अपनी आंखें भी तो बन्द न करें"।[4]

करता है। जिस प्रकार लेखन में अनेक प्रकार के वाद विवाद होते हैं यदि उसी प्रकार कला के क्षेत्र में कलाकारों के मध्य अपनी कलाकृतियों के माध्यम से अपने भावों को प्रकट करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयोग प्रस्तुत किए जाते हैं तो उससे कला का अत्यधिक विकास होगा। यद्यपि रामकुमार एक कहानीकार भी थे किन्तु रामकुमार ने अपनी कला के माध्यम से जनसामान्य के मध्य एक विशिष्ट पहचान बना ली है। रामकुमार ने देश–विदेश की अनेक कला प्रदर्शनियों में भाग लिया था एवं उन्होंने अनेक एकल प्रदर्शनों का आयोजन भी किया था। वे कला प्रदर्शनियों में लगी अपनी कलाकृतियों बारे में जनसामान्य के विचारों को जानने के लिए उत्सुक रहते थे। उन्होंने कभी भी ख्याति प्राप्त करने के लिए अपनी कलाकृ तियों का निर्माण नहीं किया अपितु रामकुमार ने आजीवन एक कला –साधक के रूप में अपनी कला को विकसित किया था। बिना साधना किए हुए धनोपार्जन तथा ख्याति प्राप्ति हेतु कलाकृतियों का निर्माण करने से कला पर अत्यधिक दुष्प्रभाव पड़ता है।

विदेश में सामान्य मनुष्य व कला के बीच सम्बन्ध के बारे में उन्होंने कहा था कि – "वहाँ कला प्रदर्शनी में टिकट लगते हैं और इन टिकटों की बिक्री महीनों पहले शुरू हो जाती है। वहाँ प्रदर्शनियों में कभी भीड़ इक्ट्ठी नहीं होने देते एक निश्चित संख्या के बाद लोगों का प्रवेश वर्जित है यूरोप के किसी भी शहर में चले जाइए, वहाँ के आर्ट – म्युजियम में मेला लगा दिखेगा। लोग अपने परिवार के साथ इन जगहों पर आते हैं, और हमारे दिल्ली में अस्सी प्रतिशत लोगों ने कभी नेशनल म्युजियम भी नहीं देखा होगा"। रामकुमार ने वर्ष 1970 में जे.डी. रॉकफेलर III फैलोशिप – न्यूयॉर्क प्राप्त की व उसके पश्चात् भारत सरकार ने रामकुमार को वर्ष 1972 में 'पद्म श्री' पुरस्कार से सम्मानित किया तथा वर्ष 2010 में 'पद्म भूषण' पुरस्कार से सम्मानित किया था। रामकुमार भारतीय कला के एक ऐसे कलाकार थे जिन्होंने अपनी कला के माध्यम से न केवल भारतीय कला में अपितु विश्व कला जगत में अपनी गहरी छाप छोड़ी है। भारतीय कला का यह अलौकिक सितारा वर्ष 2018 में इस भूलोक को त्यागकर परलोक में जा बसा जिसकी भारतीय कला को अत्यधिक व अपूर्णीय क्षति हुई है व जिसकी कभी भी पूर्ति नही की जा सकती। अपनी कलाकृतियों के माध्यम से रामकुमार हमेशा हमारे बीच रहेंगें। रामकुमार ने अपनी कला व माध्यम से भारतीय कला को एक नई दिशा प्रदान की और इसे विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। रामकुमार एक प्रतिभाशाली कलाकार व एक प्रमुख कथाकार थे, उन्होंने अपनी कला व कहानियों के माध्यम से समाज के एक बड़े वर्ग के बीच अपने विशिष्ट पहचान बनाई थी। रामकुमार ने अपनी कलाकृतियों में आत्म–अभिव्यक्ति व कला–संयोजन आदि के माध्यम से इस प्रकार निर्मित किया है कि दर्शक उनकी कलाकृतियों की ओर स्वयं ही खिचा चला आता है। रामकुमार की कलाकृतियाँ अचानक देखने पर स्वतःस्फूर्त निर्मित दिखाई देती हैं किन्तु यह वास्तविकता नहीं है, रामकुमार ने अत्यधिक सावधानीपूर्वक व कलात्मक अनुशासन में बंधकर ही अपनी कलाकृतियों का निर्माण किया हैं।[5]

जिस प्रकार एक कवि अपने भावों को अपनी कविताओं तथा लेखन के माध्यम से व्यक्त करता है उसी प्रकार एक कलाकार भी अपनी लग्न, अपने परिश्रम व अपनी अत्यधिक कला साधना के पश्चात् आत्म अभिव्यक्ति को अपनी कलाकृ तियों में व्यक्त करता है, किन्तु अनेक व्यक्ति कलाकार द्वारा अथक प्रयास के फलस्वरुप महीनों के पश्चात् निर्मित की गई कलाकृति के सौन्दर्य, रूप, सन्देश, स्तर आदि का कुछ ही क्षणों में विश्लेषण कर देते हैं, विश्लेषणकर्ता उस कलाकृति के अच्छे व बुरे पक्ष को अति अल्पकाल में प्रस्तुत कर देते हैं। किसी भी कलाकार की कलाकृति के सभी पक्षों का अति सूक्ष्मता से अध्ययनोपरान्त ही विश्लेषण करना उचित है अन्यथा अल्पकाल में ही कलाकार द्वारा आत्म अभिव्यक्ति तथा अत्यधिक समयावधि के उपरान्त निर्मित कलाकृति के संपूर्ण पक्षों का विस्तृत अध्ययन के बिना ही, अल्पकाल में विश्लेषणकर्ता द्वारा कलाकृति को अच्छा या बुरा कहना न्याय संगत न होगा। किसी कलाकार द्वारा बनाई गई आकृतिपरक कलाकृति में सामान्य दर्शक सौंदर्य, भाव तथा संदेश आदि को सरलतापूर्वक समझ सकता है, दर्शक को उस कलाकृति के रसास्वादन में अत्यधिक बौद्धिकता की आवश्यकता नहीं होती और वह कलाकृति के समक्ष सरकार द्वारा समस्त भावों को ग्रहण कर आनन्द की अनुभूति प्राप्त करता है, किन्तु किसी वस्तुनिरपेक्ष कलाकृति के निर्माण में कलाकार द्वारा अपने अन्तर्निहित भावों को प्रदर्शित किया जाता है और दर्शक को उस कलाकृति के समस्त भावों के रसास्वादन हेतु बौद्धिकता की आवश्यकता होती है तभी वह उस कलाकृति के माध्यम से पूर्ण रूप से आनन्दित हो सकता है। सामान्य दर्शक वस्तुनिरपेक्ष कलाकृति की अपेक्षा आकृ

तिपरक कलाकृति के समस्त पक्षों को अत्यधिक तीव्रता से समझ सकता है। रामकुमार की कलाकृतियों में विशेष प्रकार का आकर्षण है, जिस कारण दर्शक उनकी कला के भावात्मक तथा सौन्दर्यात्मक पक्ष को शीघ्रता से ग्रहण करता है। रामकुमार की कला के गहन अध्यनोपरान्त नवीन कलाकार अपनी कला के श्रेष्ठतम स्तर पर पहुँचने में बाधक तत्वों को पूर्णतः समाप्त कर उसे और अधिक विकसित कर सकता है। रामकुमार की कला से प्रेरित होकर अनेक कलाकार अपनी कला में अनेक प्रकार के प्रयोग कर रहे है। उनकी कला अनेक वस्तुनिरपेक्ष कलाकारों को महत्वपूर्ण मार्गदर्शक का कार्य कर रही है। अपनी कला में अनेक माध्यमों से विभिन्न प्रयोग किये जाने के कारण कलाकार वस्तुनिरपेक्ष कला की ओर आकर्षित हुए है और वस्तुनिरपेक्ष कला में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने हेतु प्रयासरत हैं।

सन्दर्भ :

1, शुकदेव श्रोत्रिय, कला विचार , 2001 , पृष्ठ – 85 – 86

2, डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल, आधुनिक भारतीय चित्रकला, पंचम संस्करण – 2006, पृष्ठ – 166

3, **https://en.m.wikipedia.org/wiki/Ram_Kumar_(artist)**

4, डॉ. ज्योतिष जोशी, समकालीन कला – अंक 25 (नवंबर 2004 – फरवरी 2005), ललित कला अकादमी का प्रकाशन, पृष्ठ – 46

5, प्राणनाथ मागो, भारत की समकालीन कला – एक परिप्रेक्ष्य, पहला संस्करण 2006 – दूसरी आवृत्ति 2011 , पृष्ठ – 157

रामकुमार, अनटाईटल्ड, 1983

रामकुमार, अनटाईटल्ड, 1961

रामकुमार, अनटाईटल्ड, 2010

रामकुमार, अनटाईटल्ड, 1971